ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

Vindhyan Bloom

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-40*

भारतीय ज्ञान प्रणाली *(IKS)* और पर्यावरण :सतत् विकास की दिशा में पारंपरिक ज्ञान की प्रासंगिकता

सोदान सिंह चौहान, *पी.एम.सी.ओ.ई. शास. माधव कॉलेज, उज्जैन (म.प्र.)*
डॉ. प्रमिला बघेल *विभागाध्यक्ष (भूगोल) शासकीय माधव विज्ञान महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)*

1. सारांश *(Abstract)*

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास, जल संकट तथा पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएँ वैश्विक स्तर पर मानव सभ्यता के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। आधुनिक वैज्ञानिक विकास ने जहाँ मानव जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित किया है। ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान प्रणाली *(Indian Knowledge System – IKS)* पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास के लिए एक वैकल्पिक तथा समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। भारतीय परंपरा में प्रकृति को केवल संसाधन नहीं बल्कि जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। वेद, उपनिषद, पुराण, बौद्ध एवं जैन साहित्य, लोक परम्पराएँ तथा आदिवासी ज्ञान प्रणालियाँ पर्यावरणीय संतुलन और प्रकृ ति संरक्षण की अवधारणा को मजबूत करती हैं।

यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान प्रणाली और पर्यावरण के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण करने के साथ ही यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार पारम्परिक भारतीय ज्ञान आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान में सहायक हो सकता है। अध्ययन में पवित्र उपवन *(Sacred Groves)*जल संरक्षण प्रणालियाँ, जैविक कृषि, लोक ज्ञान तथा सामुदायिक संरक्षण जैसे आयामों का विवेचन किया गया है। शोध पत्र का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल साँस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि सतत् विकास की दिशा में एक व्यवहारिक मॉडल भी है।

मुख्य शब्द– भारतीय ज्ञान प्रणाली, पर्यावरण संरक्षण, सतत् विकास, पारंपरिक ज्ञान, जैव विविधता, जल संरक्षण।

2. परिचय *(Introduction)*:

21वीं शताब्दी में पर्यावरणीय संकट मानव अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन गया है। वैश्विक तापवृद्धि, वन विनाश, जल प्रदूषण तथा जैव विविधता में कमी जैसी समस्याएँ मानव–प्रकृति संबंधों में असंतुलन को दर्शाती हैं। आधुनिक विकास मॉडल मुख्यतः उपभोक्तावादी दृ ष्टिकोण पर आधारित रहा है, जिसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है।

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व पर बल देती है। भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को "माता" तथा नदियों, पर्वतों और वृक्षों को देवतुल्य माना गया है। अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त के माध्यम से पृथ्वी के संरक्षण का संदेश दिया गया है। इसी प्रकार उपनिषदों में "वसुधैव कुटुम्बकम" की अवधारणा सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की प्रेरणा देती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार केवल धार्मिक आस्था नहीं बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। जल संरक्षण, वन प्रबंधन, कृषि पद्धतियाँ तथा पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियाँ पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। आज जब विश्व सतत विकास *(Sustainable Development)* की ओर अग्रसर है, तब भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है।प्राचीन साहित्य अधिकांशतः वैचारिक या सैद्धांतिक स्तर पर उपलब्ध है। यद्यपि इस विषय पर बहुत कम शोध हुआ हैं जो यह दिखा सकें कि कैसे इन पारंपरिक प्रणालियों को आधुनिक सरकारी नीतियों और शहरी नियोजन में व्यावहारिक रूप से लागू किया जाए परन्तु यह शोध इस दिशा ध्यान आकृष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

3. साहित्य समीक्षा *(Literature Review)*:

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

प्राचीन भारतीय वास्तुकला, वेदों और उपनिषदों में पर्यावरण को केवल एक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन के आधार है। भारतीय वेदों यथा–ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद (विशेषकर भूमि सूक्त) की समीक्षा से पता चलता है कि पृथ्वी को माता (माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः) और प्रकृति के तत्वों (अग्नि, वायु, जल, वनस्पति) को देवताओं के समतुल्य माना गया है, यह दृष्टिकोण अंधविश्वास नहीं, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन *(Ecological Balance)* बनाए रखने का एक सामाजिक नियम था।भारतीय दर्शन के अनुसार संपूर्ण सृष्टि और मानव शरीर पांच तत्वों—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर बना है। अतः इन तत्वों की शुद्धता बनाए रखना ही प्राचीन समय में पर्यावरण संरक्षण का मूल था।

भारत के विभिन्न राज्यों में जल प्रबंधन की समृद्ध परंपरा रही है (जैसे राजस्थान में बावड़ी, टांका, जोहड़ और दक्षिण भारत में एरी प्रणाली)।ये प्रणालियाँ विकेंद्रीकृत थीं और आज के भूजल संकट को दूर करने में पूरी तरह सक्षम हैं।कृषि–पराशर और वृक्षायुर्वेद जैसे प्राचीन ग्रंथों का संदर्भ देते हुए शोधकर्ता बताते हैं कि प्राकृतिक खेती, फसल चक्र और जैविक खाद का उपयोग आधुनिक रासायनिक खेती का एक बेहतरीन और टिकाऊ विकल्प है।भारत के विभिन्न हिस्सों में पाए जाने वाले 'देवराई' या पवित्र वन इस बात का प्रमाण हैं कि समुदाय–आधारित संरक्षण कैसे काम करता है। इन वनों में कटाई पूरी तरह प्रतिबंधित होती है, जिससे दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों का प्राकृतिक आवास बचा रहता है।

पाश्चात्य औद्योगिक क्रांति का मॉडल मुख्य रूप से मानवकेंद्रित रहा है, जहाँ प्रकृति को मनुष्य के उपभोग की वस्तु माना गया। इसके विपरीत, IKS'वसुधैव कुटुंबकम' और 'ईशावास्यमिदं सर्वं' (जो कुछ भी इस संसार में है, वह ईश्वर का है और हमें इसका उपभोग त्यागपूर्वक करना चाहिए) के सिद्धांत पर आधारित है। यह विचार उपभोक्तावाद पर लगाम लगाने की वकालत करता है।

IKS संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की पूर्ति भी करता है।SDG–12 जिसमें जिम्मेदारीपूर्ण उपभोग और उत्पादन *(Responsible Consumption and Production)*, SDG–13 जलवायु कार्रवाई *(Climate Action)*, SDG–15 भूमि पर जीवन *(Life on Land)*को प्राप्त करने में सीधे मदद कर सकता है। इस प्रकार पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक विज्ञान के साथ मिलाकर *(Hybrid Approach)* अधिक प्रभावी नीतियाँ बनाई जा सकती हैं।

इस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली *(IKS)* केवल अतीत की बातें नहीं हैं, बल्कि भविष्य के लिए एक व्यावहारिक 'रोडमैप' हैं। वर्तमान शोधों में इस बात पर सर्वसम्मति है कि आधुनिक तकनीक और नीतियों में जब तक पारंपरिक और नैतिक मूल्यों को शामिल नहीं किया जाएगा, तब तक जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं का स्थायी समाधान खोजना असंभव है। यद्यपि भारतीय पारंपरिक ज्ञान का एक बड़ा हिस्सा लिखित रूप में होने के बजाय 'श्रुति' (मौखिक परंपरा) के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित हुआ, जिसके कारण बहुत सा ज्ञान समय के साथ लुप्त हो गया और मूल ज्ञान संस्कृत या स्थानीय भाषाओं (जैसे तमिल, प्राकृत) में है, जिसके कारण आधुनिक वैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं तक इसकी सही पहुंच नहीं हो पाती।

4. विधितंत्र*(Methodology)*:

इस शोध को पूर्ण करने के लिए मिश्रित दृष्टिकोण *(Mixed Approach)*को अपनाया गया, जिसमें मुख्य रूप से ऐतिहासिक, दार्शनिक और विश्लेषणात्मक विधियों का उपयोग किया गया है। शोध की प्रामाणिकता के लिए आँकड़ों को दो मुख्य श्रेणियों प्राथमिक स्त्रोत एवं द्वितीयक स्त्रोत से एकत्रित किया गया है। प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत प्राचीन ग्रन्थों के विद्वजनों का साक्षात्कार एवं द्वितीयक स्त्रोत में प्राचीन भारतीय ग्रंथ (ऋग्वेद, अथर्ववेद का भूमि सूक्त, ईशोपनिषद, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, कृषि–पराशर और वृक्षायुर्वेद)।पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी पारंपरिक संहिताओं और नीतियों के दस्तावेजों की जानकारी और प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाएँ, पर्यावरण विज्ञान की समीक्षाएँ, संयुक्त रिपोर्ट (जैसे IPCC या नीति आयोग की रिपोर्ट)।IKS *(Indian Knowledge Systems)* और सतत विकास *(Sustainable Development)* पर लिखे गए समसामयिक विशेषज्ञों के शोध पत्र और पुस्तकें।

प्राचीन संस्कृत श्लोकों और सूत्रों का आधुनिक पर्यावरणीय संदर्भों (जैसे जैव विविधता, जल चक्र, पारिस्थितिकी) में अनुवाद और वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।तुलनात्मक विधि *(Comparative Method)* आधुनिक पश्चिमी पर्यावरण संरक्षण मॉडल और भारतीय मॉडल की तुलना की गयी है।केस स्टडी पद्धति *(Case Study Method)*पारंपरिक ज्ञान की

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

व्यावहारिक प्रासंगिकता सिद्ध करने के लिए भारत के सफल पारंपरिक मॉडलों का अध्ययन शामिल किया जाएगा (जैसे– राजस्थान का जल प्रबंधन या पूर्वोत्तर भारत के पवित्र उपवन)।

5. परिणाम और विश्लेषण *(Results & Analysis)*:

प्राथमिक स्रोतों (वेदों, उपनिषदों और संहिताओं) के अध्ययन से जो परिणाम सामने आते हैं, वे यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणाली में पर्यावरण संरक्षण कोई बाहरी नियम नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा था। वेदों के मंत्रों का विश्लेषण करने पर यह परिणाम मिलता है कि प्रकृति के शोषण और दोहन के बीच एक स्पष्ट रेखा खींची गई थी। 'ऋत' *(Cosmic Order)* की अवधारणा यह दर्शाती है कि प्रकृति के नियमों के साथ छेड़छाड़ का सीधा असर मानव अस्तित्व पर पड़ता है।ईशोपनिषद के पहले श्लोक का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य को केवल अपनी आवश्यकता के अनुसार ही संसाधनों का उपयोग करना चाहिए, जो आज के SDG–12 (सतत उपभोग) का मूल आधार है।

भारतीय पारंपरिक पद्धतियाँ जिनमें जल प्रबंधन की विधियाँ यथा–जोहड़, बावड़ी, टांका, एरी प्रणाली भूजलस्तर का रिचार्ज होना, बाढ़ और सूखे के विकेंद्रीकृत का समाधान है। कृषिवृक्षायुर्वेद में जैविक खाद, फसल चक्र जैसे पद्धतियों से रासायनिक खादों से बंजर होती भूमि का पुनरुद्धार एवं मृदा स्वास्थ्यमें सुधार किया जा सकता है।जैव विविधता के लिए पवित्र उपवन (Sacred Groves/ देवराई), जिसमें बिना किसी सरकारी खर्च के समुदाय द्वारा दुर्लभ वनस्पतियों और स्थानीय जीव–जंतुओं का प्राकृतिक संरक्षण किया जाता है।

पाश्चात्य मॉडल प्रकृति को मानव के उपभोग की एक 'वस्तु' *(Commodity)* मानता है, जिसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ पैदा हुईं हैं। इसके विपरीत, IKS मॉडल 'सह–अस्तित्व' *(Co-Existence)*पर आधारित है, जहाँ मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका एक छोटा सा हिस्सा है।आधुनिक मॉडल 'असीमित आर्थिक विकास' पर जोर देता है, जबकि भारतीय पारंपरिक मॉडल 'चक्रीय अर्थव्यवस्था'(प्रकृति से जो लिया, उसे वापस लौटाना) पर आधारित है।

पारंपरिक मौसम विज्ञान (जैसे घाघ और भड्डरी की कहावतें या प्राचीन कृषि पंचांग) स्थानीय किसानों को आज भी बदलते मौसम के अनुसार फसल चयन में मदद कर सकते हैं।पारंपरिक जीवनशैली (मिट्टी–चूने के घर, स्थानीय खान–पान, प्राकृतिक रंगों का उपयोग) कार्बन उत्सर्जन को कम करने का सबसे व्यावहारिक और प्रभावी उपाय है।

6. चर्चा *(Discussion)*:

भारतीय ज्ञान प्रणाली *(IKS)* कोई पुरानी या पिछड़ी हुई व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह आधुनिक पारिस्थितिकी विज्ञान के अनुकूल है।वेदों में वर्णित 'यज्ञ' की परंपरा को केवल धार्मिक अनुष्ठान न मानकर, वायुमंडल की शुद्धि और विशिष्ट औषधीय वनस्पतियों के धुएँ से सूक्ष्मजीवों के नियंत्रण के रूप में देखा जा सकता है।प्राचीन काल का 'पंचमहाभूत' सिद्धांत आज के 'इकोसिस्टम' की वैज्ञानिक व्याख्या से पूरी तरह समानता रखता है।

आधुनिक कानून और नीतियां पर्यावरण संकट को रोकने में पूरी तरह सफल क्यों नहीं हो पा रहे हैं।आधुनिक प्रणालियों ने पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी केवल सरकार या वन विभाग पर डाल दी है। इसके विपरीत, IKS का मॉडल 'सामुदायिक जिम्मेदारी' पर आधारित था (जैसे पवित्र उपवनों या तालाबों की देखभाल पूरा गाँव मिलकर करता था)।बड़े बाँधों या केंद्रीकृत जल प्रणालियों के बजाय, पारंपरिक विकेंद्रीकृत प्रणालियाँ (जैसे बावड़ी या जोहड़) स्थानीय स्तर पर अधिक टिकाऊ और कम खर्चीली हैं।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर जिस 'मिशन लाइफ' (पर्यावरण के लिए जीवनशैली) की बात की जा रही है, उसकी जड़ें भारतीय ज्ञान परंपरा में हैं।आधुनिक समाज 'उपयोग करो और फेंको' *(Use and Throw)* की संस्कृति पर चल रहा है। भारतीय परंपरा 'पुनर्चक्रण' और 'मितव्ययिता' सिखाती है, जिसे आज की 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' के रूप में अपनाना अनिवार्य हो गया है। इस प्रकार हमें 'अतीत की ओर वापस नहीं लौटना है', बल्कि 'अतीत से सीखकर भविष्य को संवारना है'। IKS आधुनिक विज्ञान का विकल्प नहीं, बल्कि उसका एक आवश्यक पूरक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत स्कूली और उच्च शिक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों कोIKS के पर्यावरणीय मूल्यों से अवगत कराया जाना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का भाव पैदा हो।हमें अतीत में वापस नहीं लौटना है, बल्कि प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का एक हाइब्रिड मॉडल तैयार करना है, जहाँ तकनीक आधुनिक हो लेकिन मूल्य पारंपरिक हों।भारतीय ज्ञान परंपरा की यह सीख कि प्रकृति हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं, आज के 'उपयोग करो और फेंको' *(Use and Throw)*वाले समाज के लिए

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

एक मार्गदर्शक प्रकाश है। सतत् विकास का रास्ता प्रकृति के दोहन से नहीं, बल्कि उसके पोषण से होकर गुजरता है।

7. निष्कर्ष *(Conclusion)*:

प्रस्तुत शोध यह सिद्ध करता है कि वर्तमान वैश्विक पर्यावरण संकट (जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, जल संकट) का मूल कारण मनुष्य का प्रकृति–विरोधी और अत्यधिक उपभोक्तावादी दृष्टिकोण है। भारतीय ज्ञान प्रणाली *(IKS)* इसका सबसे व्यावहारिक और समय–परीक्षित समाधान प्रस्तुत करती है, जो प्रकृति पर विजय पाने के बजाय उसके साथ 'सह–अस्तित्व' और सामंजस्य पर आधारित है।IKS में पर्यावरण संरक्षण केवल एक कानूनी बाध्यता नहीं, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक कर्तव्य रहा है। वेदों का पंचमहाभूत सिद्धांत और उपनिषदों की शिक्षाएँ आधुनिक पारिस्थितिकी विज्ञान के पूरी तरह अनुकूल हैं।

भारत के पारंपरिक जल प्रबंधन (बावड़ी, जोहड़), पारंपरिक कृषि (वृक्षायुर्वेद, जैविक खेती) और समुदाय–आधारित संरक्षण (पवित्र उपवन/देवराई) आज भी उतने ही प्रभावी हैं जितने सदियों पहले थे। ये मॉडल आधुनिक सतत् विकास लक्ष्यों*(SDGs)*को प्राप्त करने की दिशा में बेहद कम लागत वाले और दीर्घकालिक समाधान प्रदान करते हैं।भारतीय ज्ञान प्रणाली को केवल अकादमिक चर्चाओं तक सीमित न रखकर, इसे देश की मुख्यधारा की पर्यावरण नीतियों, शहरी नियोजन और जल प्रबंधन रणनीतियों में शामिल किया जाना चाहिए।

8. संदर्भग्रन्थसूची *(Bibliography)*:

- Agarwal, A., & Narain, S. (1997).*Dying Wisdom: Rise, Fall and Potential of India's Traditional Water Harvesting Systems.* State of India's Environment: A Citizens' Report, Center for Science and Environment (CSE), New Delhi.
- Dwivedi, O. P. (1996).*Satyadhrtam the earth: Vedic and Hindu perspectives on environmental ethics.* Environmental Ethics, 18(2), 115-132.
- Gadgil, M., & Vartak, V. D. (1975).*Sacred groves of India: A plea for continued preservation.* Journal of the Bombay Natural History Society, 72(2), 311-328.
- IKS Division, AICTE. (2022).*Working papers on traditional agricultural and water management practices in India.* Ministry of Education, Government of India, New Delhi.
- Kapoor, K., & Singh, A. K. (2005).*Indian Knowledge Systems (Vol 1 & 2).* New Delhi: D.K. Printworld.
- Ministry of Education, Government of India. (2020).*National Education Policy (NEP 2020).* New Delhi.
- Mishra, A. (1993).*Aaj Bhi Khare Hain Talaab (Ponds are still relevant).* New Delhi: Gandhi Peace Foundation.
- Mishra, A. (1995).*Rajasthan Ki Rajat Boondein (The radiant raindrops of Rajasthan).* New Delhi: Gandhi Peace Foundation.
- NITI Aayog. (2023).*Report on National Mission on Sustainable Agriculture (NMSA) and traditional farming practices.* Government of India, New Delhi.
- Radhakrishnan, S. (1953).*The Principal Upanisads.* London: George Allen & Unwin.
- Shiva, V. (1993).*Monocultures of the Mind: Perspectives on Biodiversity and Biotechnology.* London: Zed Books.